कविता

केशव शरण

संपर्क- एस2/564 सिकरौल, वाराणसी
मोबाइल नंबर - 9415295137
ईमेल- keshavsharan564@gmail.com

दुनिया एक बाग़ हो

सुबह की
सुहानी हवा में
विहार करते हुए
ख़याल आया
हमारी दुनिया
एक बाग़ हो
जिसमें हम सैर करें
क्यों बैर करें

प्यार की ताक़त जानते हैं
फिर नफ़रत क्यों पालते हैं
लम्बी साँस भरते हुए
विचार आया

आवश्यकता है सम्पूर्ण मानवता के ज़ख़्मों पर
मरहम की
न कि एटम बम की
लम्बी साँस छोड़ते हुए
उद्गार निकला
और इसी के साथ सूरज नारंगी रंग का
वृक्षाच्छादित क्षितिज के पार उभरा

फूल और मैं

एक फूल ने
सँभाल लिया है
फ़िलहाल
सारा भार
मेरे दुखों का
और हवा में
झूम भी रहा है
आनंद से
जबकि तितली का वज़न
पहले से उस पर था

उसके झूमने से
मेरा दिल भी
झूम रहा है
जो हो रहा पत्थर था

पगडंडी

गोया, एक मटमैली
पतली-सी नदी
बही जा रही है
दोनों किनारों पर दूर तक
बेपनाह वनैली वनस्पतियों, घास-फूस के
पावसी विस्तार और वैभव में
यूँ चली जा रही है पगडंडी

घास-फूस औ वनैली वनस्पतियों को
कोई रोक नहीं सकता
परती और पावस में
सिवा पगडंडी
और नदी के
जो रोकती है
जंगल को
अपने अंदर
दाख़िल होने से

जंगल में बहती नदी की तरह
सुन्दर लगती
परती में लहराती पगडंडी
जिसके पार है
सड़क, बाज़ार और मंडी!

बेल

बेल जा चढ़ी है
अंतिम मुँडेर पर
वहीं घनी होती
नीचे उतर रही है

एक अदा यह उसकी
दूसरी विशेषता यह कि
कानन-कुण्डल जैसे पुष्पों से
सतत भर रही है

तीसरी बात यह कि
भँवरों और तितलियों को
आकर्षित कर रही है
जो उसके पहले
नहीं दीखे

चौथा राज़ यह कि
वह अपने झरते फूलों से
कृतज्ञता ज्ञापित कर रही है
उस माटी के प्रति
जो उसे ले गई है
अंतिम मुँडेर तक

सूर्यप्रताप सिंह चौहान

शिक्षा- स्नातकोत्तर (टेक्सटाइल इंजीनियरिंग)
व्यवसाय- टेक्सटाइल इंजीनियर
सम्पर्क सूत्र- 8979617620
स्थायी पता- फ़र्रुखाबाद (उत्तर-प्रदेश)
ईमेल- surya15894@gmail.com

हैं बरसते पुष्प देखो, आज तो आकाश में।
आ गई बिटिया हमारी, जब हमारे पास में ।।

पुण्य ही आकर फले हैं, जो तुम्हारा प्रेम बरसा।
सच प्रतीक्षा में तुम्हारी, मन हमारा खूब तरसा ।।

विश्व की खुशियाँ मिली हैं, सब हमें आभास में।
आ गई बिटिया हमारी, जब हमारे पास में ।।

शांत जीवन में हमारे, बांसुरी सी बाज उट्ठी।
तान कैसी छेड़ दी है, उँगलियाँ खुद साज उट्ठी ।।

मौसमों से लग रहा हम, आ गए मधुमास में।
आ गई बिटिया हमारी, जब हमारे पास में ।।

घुँघरुओं की छनछनों में, पैर थिरके किस तरह से।
अप्सराएँ नाचती ज्यूँ, स्वर्ग मे हैं, जिस तरह से ।।

बज रहा संगीत देखो, हर तरफ आवास में।
आ गई बिटिया हमारी, जब हमारे पास में ।।